[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3475

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

संगीत के प्रचार प्रसार में संचार साधनों की भूमिका

गौरव यादव
शोधार्थी
माता जीजाबाई शा. क. स्नातकोत्तर महा. इंदौर म.प्र

बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध को वैज्ञानिक क्रांति के अभ्युदय का समय कहा जा सकता है, जहाँ वैज्ञानिक अविष्कारों के अंतर्गत कुछ ऐसे उपकरणों का अविष्कार हुआ जिन्होंने संगीत के प्रचार–प्रसार को तीव्रता प्रदान की। संचार साधनों के प्रारंभिक दौर में संगीत के क्षेत्र में एक वैज्ञानिक अविष्कार का विशेष महत्व है ,जिसने भारतीय संगीत के क्षेत्र में ही नहीं वरन् विश्व में क्रांति ला दी यह था रेडियो का आगमन। भारत में इसकी स्थापना सन् १९२७ ई. में हुई। सन् १९३६ ई. में इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सेवा का नाम बदलकर आकाशवाणी कर दिया गया।

उस समय आकाशवाणी एक सशक्त माध्यम था शास्त्रीय संगीत को जन–जन तक पहुँचाने के लिये। यद्यपि प्रसारण सुनने में साफ न था किन्तु रसिक श्रोताओं को घर में ही बैठकर सुनने का एक साधन मिल गया था जो कि किसी चमत्कार से कम न था। साथ ही कम समय में परंपरागत शुद्धता के साथ आलापतान और बंदिशों को अपने सम्पूर्ण असरदारी के साथ प्रस्तुत करने के प्रयासों ने आकाशवाणी को एक सशक्त संचार साधन के रूप में स्थापित करके प्रतिष्ठित किया ।

घरानेदार कलाकारों को उनके उस्ताद अन्य घरानो की गायकी से दूर रखते थे। ताकि उनकी अपनी घरानेदार गायकी को न दूसरे घराने वाले सुन सके और न उनकी छाप उनकी अपनी गायकी पर पड़े । इन कलाकारों को अपनी सीमाओं से बाहर निकालने का महत्वपूर्ण कार्य आकाशवाणी ने किया। यूँ तो घराने वस्तुतः एक प्रकार के औपचारिक संगीत शिक्षा के केंद्र थे साथ ही घरानो की संगीत शिक्षा पूर्णरूपेण व्यक्तिगत एवं गुरु की इच्छानुसार ही होती थी परन्तु आकाशवाणी तथा प्रसिद्ध गायकों – वादकों के रिकार्डों के बनने के कारण शास्त्रीय संगीत घरानों के सीमित दायरों से निकलकर इन संचार साधनों के माध्यम से सर्वसाधारण को सुलभ होने लगा।

सन् १९३६ ई. से १९४४ ई. के कालखण्ड में आकाशवाणी का माध्यम ही अपनी नवीनता के बहार पर था। संगीत की दृष्टि से इस कालखण्ड में दर्जेदार गायक उन्नति के शिखर पर विराजमान थे। तब आकाशवाणी के केन्द्रों की संख्या बहुत अल्प थी। इन चुने हुए केन्द्रों से संगीत के कार्यक्रम प्रक्षेपित होने से देश के अनेक श्रेष्ठ संगीतकार यहाँ आमंत्रित किये जाते और कार्यक्रम का स्तर उच्च ही रहता था। घरानेदार कलाकारों ने इस माध्यम द्वारा अपनी गायकी को दूर–दूर तक जन–जन तक पहुँचाया।

यद्यपि आकाशवाणी द्वारा प्रसारित संगीत कार्यक्रमों के माध्यम से संगीत का प्रचुर मात्रा में प्रचार हो रहा था तथापि अभी उसमें और सुधार की आवश्यकता को अनुभव किया जा रहा था। इसी को ध्यान में रखकर सन् १९५३ ई. में संगीत के अखिल भारतीय शास्त्रीय कार्यक्रम की शुरवात हुई, जिसके अन्तर्गत प्रत्येक शनिवार और मंगलवार को संगीत सभाओं का आयोजन होता था। इन सभाओं में प्रसिद्ध कलाकारों को सुनवाया जाता था। इसके अतिरिक्त शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने और उसे सुरक्षित रखने के प्रयासों के अन्तर्गत आकाशवाणी ने सन १९५४ ई. में संगीत सम्मलेन का आयोजन करके एक महत्वपूर्ण मोड़ दिया। यह एक सुनहरा अवसर था शास्त्रीय संगीत के श्रोताओं के लिए जिन्हें हिंदुस्तानी और कर्नाटक दोनों पद्धतियों के कलाकारों को सुनने का अवसर मिला। प्रारम्भ के दो वर्षो में संगीत सम्मेलनों को श्रोताओं के समक्ष दो श्रृंखलाओं के रूप में आयोजित किया गया। हिंदुस्तानी संगीत दिल्ली में और कर्नाटक संगीत मद्रास में, लेकिन शिक्षा तथा जनरुचि के अभाव के कारण श्रोताओं का एक बड़ा वर्ग रेडियो सीलोन सुनने लगा। यद्यपि आकाशवाणी के शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम उच्च स्तर के थे तथापि सुगम संगीत और विशेष रूप से फिल्म संगीत प्रेमी श्रोताओं ने सन् १९५७ ई. में आकाशवाणी को विविध भारती सेवा आरम्भ करने को विवश कर दिया पर दूसरे केंद्र अपने निर्धारित कार्यक्रम प्रसारित करते रहे आज भी रेडियो से नियमित शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं ।

बीसवी शताब्दी के पूर्वार्ध में यदि ग्रामोफोन रिकार्डो से कलाकारों की कला को स्थायित्व मिला और प्रचार–प्रसार बढ़ा तो बीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध में शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में ध्वनिविस्तारक यंत्रो ने तथा रिकॉर्डिंग पद्धति ने अपनी जड़ें और भी मजबूत कर ली। परिणामस्वरूप श्रोतावर्ग अब किसी भी गायन–वादन को सुनने के लिए केवल महफिलों पर ही आश्रित नहीं

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रहा वरन् संगीत स्वयं ही उसके घर आँगन में गुंजरित होने लगा। इस तरह इन संचार साधनों से शास्त्रीय संगीत के श्रोतावर्ग की सीमाएँ बहुत विस्तृत हो गई। उत्तरार्ध में ग्रामोफोन के साथ–साथ टेपरिकॉर्डर भी शास्त्रीय संगीत जगत में अपना अधिकार स्थापित करने लगा। यद्यपि टेपरिकॉर्डर का अविष्कार तो बीसवी शताब्दी के पूर्वार्ध तक हो चुका था किन्तु तब इसका प्रचार विदेशो में था उत्तरार्धकाल तक यह भारत में भी प्रचार में आ गया इसकी रिकॉर्डिंग पद्धति इतनी सरल थी कि कोई भी व्यक्ति इसका उपयोग व्यक्तिगत रूप से कर सकता था।

उत्तरार्धकाल में वैज्ञानिक अविष्कारों में तीव्रगति से परिवर्तन हो रहे थे। टेलीविजन का आगमन उत्तरार्ध की देन है। प्रचार–प्रसार की दृष्टि से जहाँ ग्रामोफोन, टेपरिकॉर्डर व आकाशवाणी में केवल श्रवण–सुविधा उपलब्ध है। वहीं दूरदर्शन द्वारा कलाकार या वार्ताकार की कला या वार्ता श्रवण कर सकने के साथ उसे प्रत्यक्ष देख सकना भी संभव हुआ जिससे श्रोता पर कलाकार का सीधा प्रभाव पड़ा। यद्यपि दूरदर्शन आकाशवाणी के समान नियमित दैनिक संगीत प्रसारण नहीं करता क्योकि यह दृश्य–श्रव्य सयंत्र होने के कारण इस पर अन्य कई प्रकार के कार्यक्रमों की श्रृंखलायें होती हैं। तथापि इसके साथ ही संगीत–सम्बन्धी कुछ कार्यक्रम भी प्रसारित किये जाते है। इन कार्यक्रमों द्वारा जन –साधारण में शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार में वृद्धि हुई। टेलीविजन से एक जगह जो कलाकार गा रहा है उसे पूरे देश में और अब तो सेटेलाइट के जरिए लोग उसको (शास्त्रीय संगीत) बाहर सुन भी रहे है और देख भी रहे हैं।

इस प्रकार इन आधुनिक उपकरणों द्वारा शास्त्रीय संगीत विदेशों में भी देखा व सुना जाने लगा ।

टेपरिकॉर्डर के साथ संगीत जगत में प्रवेश लिया एक नए कैसेट युग ने। अब लॉन्ग प्लेइंग रिकार्डो की छवि धूमिल पड़ने लगी और कैसेट्स प्रचुरता से कलाकार और श्रोतावर्ग के पास पहुँचने लगा। इसका एक कारण यह भी था कि किसी भी स्थान पर इसे सहजता से ले जाया सकता था व रिकॉर्डिंग हो सकती थी साथ ही इसकी ध्वनि की गुणवत्ता भी बेहतर हो गयी थी। फलतः लॉन्ग प्लेइंग रिकॉर्ड की पुरानी रिकॉर्डिंग को कैसेट्स पर उतारा गया जिससे सुनने–सुनाने की सुविधा कलाकार और श्रोता दोनों के लिए बढ़ गई।

एक अन्य वैज्ञानिक उपलब्धि के रूप में वीडियो कैसेट रिकॉर्डर का विवरण देना आवश्यक प्रतीत होता है जिससे टी. वी. पर प्रस्तुत कार्यक्रम को देखकर उसे रिकॉर्ड करना भी सुलभ हुआ। जब टी. वी. का विस्तार होना आरम्भ हुआ, तभी से वैज्ञानिकों के मन में टी. वी. पर प्रसारित होने वाले चित्रों को रिकॉर्ड करने की जिज्ञासा मन में हुई। जिस तरह टेपरिकॉर्डर में ध्वनि की तरंगें मैगनेट की शक्ति में परिवर्तित करके रिकॉर्ड करते हैं, उसी प्रकार से चित्र को भी पहले विद्युत की तरंगो में बदलकर तथा फिर उसको मैगनेट की शक्ति में परिवर्तित करके रिकॉर्ड करना आरम्भ किया। आज अनेक संगीत शास्त्र के कलाकारों की कला व साक्षात्कार की वीडियो रिकॉर्डिंग उपलब्ध है जिसका शोधार्थी उपयोग कर सकते है।

ध्वनि का अंकन अब तक पुराने उपकरणों के माध्यम से ही संभव था। जिसमे अन्य अवांछनीय ध्वनियों के मिश्रण की संभावना रहती थी, इसको रोकने का एकमात्र तरीका ध्वनि को डिजिटल बनाने की तकनीक का विकास करके किया। डिजिटल ध्वनि की विधि से ध्वनि को रिकॉर्ड करने का तरीका कॉम्पेक्ट डिस्क में कंप्यूटर के माध्यम से इस्तेमाल किया गया। ग्रामोफोन से शुरू हुई रिकॉर्डिंग पद्धति की यात्रा कॉम्पेक्ट डिस्क तक सुचारू रूप से पहुंची किन्तु वैज्ञानिक अनुसन्धान और प्रयोग की प्रक्रिया यही न रूककर गति के साथ एक नए मार्ग पर बढ़ चली जिसका सुपरिणाम डी.वी.डी. के रूप में सामने आया इस तकनीक में सी. डी. की अपेक्षा उच्चतर फेडोलिटी रिकॉर्डिंग की सुविधा है और साथ ही अधिक स्पष्टता भी। डी. वी. डी. डिस्क में ६ चैनल्स सराउंड साउंड (चारो और फैलने वाली ध्वनि) है । जिससे संगीत अधिक समृद्ध हुआ साथ ही इसकी डेटा संग्रहण क्षमता सी. डी. की क्षमता से सात गुना अधिक है। जिससे न केवल ध्वनि को सुरक्षित किया गया अपितु शास्त्रीय संगीत की पुरानी रिकॉर्डिंग को भी ध्वन्यात्मक गुणवत्ता की दृष्टि से और भी उत्कृष्ट बना दिया गया। देश की विभिन्न केंद्रीय अकादमी के पास नृत्य–नाट्य संगीत के ग्रंथो की ई –लाइब्रेरी भी है जहाँ ध्वनि पट्टिकाओं, ध्वनि मुद्रिकाओं का विशाल संग्रह है। अनेक संगीत विश्वविद्यालायों में विद्यार्थियों को संगीत सीखने व समझने के लिए श्रव्य–दृश्य कक्ष की सुविधा, रिकॉर्डिंग हेतु साउंड प्रूफ कक्ष का भी निर्माण किया गया।

टेलीविजन के आगमन के बाद जैसे – जैसे आम जन–मानस की पहुंच में यह आया, वैसे–वैसे संचार–साधनो में टेलीविजन संगीत के प्रचार का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरने लगा । आज टेलीविजन पर फिल्म संगीत के साथ शास्त्रीय संगीत के भी कुछ कार्यक्रम प्रसारित होते है। टेलीविजन पर कई प्रकार के म्यूजिक चैनल्स की भरमार है जिस पर देशी, विदेशी संगीत के साथ भारतीय फिल्म संगीत को सुना जा सकता है। शास्त्रीय संगीत पर आधारित फिल्म संगीत भी इस माध्यम

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

द्वारा जन साधारण तक पंहुचा है तथा सराहा गया है। आज इन पर एम टीवी अनप्लग्ड जैसे विभिन्न संगीत कार्यक्रम सफलतापूर्वक प्रसारित किये जा रहे हैं साथ ही टेलीविजन पर होने वाले प्रतिभा खोज कार्यक्रमों द्वारा नए कलाकारों को राष्ट्रीय मंच पर कला के प्रदर्शन का अवसर मिलने लगा है टेलीविजन के माध्यम से होने वाले संगीत के प्रचार–प्रसार को कम करके नहीं आँका जा सकता है।

संगीत के प्रचार–प्रसार हेतु संचार साधनों में अत्याधुनिक सा धन है। इंटरनेट। यह एक–दूसरे से जुड़े संगणको का एक विश्व–व्यापी नेटवर्क या जाल है । इंटरनेट पर देशी–विदेशी संगीत की हर विधा की ऑडियो–वीडियो सुविधा उपलब्ध है। संगीत – प्रेमी इन्हें कहीं भी, कभी भी, किसी भी समय सुन–देख व साथ ही संग्रहित भी कर सकते हैं, इंटरनेट पर ऑनलाइन संगीत शिक्षण की समुचित व्यवस्था है । अतः कहना न होगा कि जिस गुरुमुखी विद्या को सीखने के लिए शिष्य को गुरु के पास जाना होता था आज वह घर बैठे ही अपने गुरु से सीख सकता है । संगीत जगत में यह कम्प्यूटर जनित व्यवस्था धीरे–धीरे अपना स्थान बना रही है । इंटरनेट पर विभिन्न वेबसाइट्स से संगीत सम्बन्धी वांछित जानकारियां एकत्रित की जा सकती हैं। पाठक या शोधार्थी द्वारा संगीत सम्बन्धी पुस्तकों को ऑनलाइन पढ़ सकना तथा उन्हें अपने पास में संग्रहित कर सकना इंटरनेट के माध्यम से संभव हो सका।

कल तक कलाकार एक ही जगह, जहाँ वह रहता था वहीं या उसके आस–पास ही, अपनी कला के प्रशंसकों से, श्रोताओ से जुडा़ रहता था। दूर–दूर तक उसकी कला नहीं, केवल उसका नाम ही पहुँच पाता था। इसी से घरानेदार कलाकार अपने घराने तक ही सीमित रहते थे, किन्तु विज्ञान ने अनेक प्रचार–प्रसार माध्यमों के द्वारा व अनेक सुविधाओ द्वारा कलाकार की कला को विदेशों तक पहुँचाया। कलाकार इंटरनेट के माध्यम द्वारा अपनी कला को श्रव्य या दृश्य रूप में अपलोड करके देश–दुनिया के समक्ष प्रदर्शित कर सकते हैं, उसे साझा कर सकते है।

आज डिजिटल प्रौद्योगिकी का युग है। मोबाइल, रेडियो पेजिंग, इंटरनेट पर आधारित संचार प्रौद्योगिकी का रूप निरंतर बदल रहा है तथा इन संचार साधनो ने दिन–प्रतिदिन संगीत के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण व अग्रणी भूमिका का निर्वाह करते हुए संगीत को सर्वसुलभ बना दिया है।